होली पर रंग जायें 'होली' में...

भारत में देसी वर्ष फाल्गुन की पूर्णमासी को समाप्त होता है। इसलिए फाल्गुन की पूर्णमासी को होलिका जलाने का अर्थ पिछले वर्ष की कटु और तीखी स्मृतियों को जलाना, अपने दुःखों को भुलाना और हँसते-खेलते नये वर्ष का आह्वान करना है। अतः भारत के उत्तर प्रदेश में कई लोग 'होलिका दहन' को 'संवत जलाना' भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त पुराने वर्ष के अंत में इस त्योहार का मनाया जाना वृहद दृष्टि में इस रहस्य का परिचय भी देता है कि यह त्योहार पहले-पहले कल्प अथवा कलियुग के अंत में मनाया गया था। जिसके बाद सतयुग के सुख-शांति के दिन शुरू हुए थे। कलियुग के अंत में होलिका जलाने से मनुष्य के दुःख, दरिद्रता, वासना तथा व्यथा सब दूर हो गए थे। परन्तु प्रश्न उठता है कि होलिका जलाने से मनुष्य के विकार और विकर्म तथा दुःख और कलेष भला कैसे नाश हो सकते हैं?

स्पष्ट है कि लकड़ियां तथा गोबर जलाना ही 'होलिका दहन' नहीं है। लकड़ियों और गोबर को तो आज भी भारत के देहातों में रोज़ जलाया जाता है। परन्तु यहाँ दुःख और दरिद्रता तथा अपवित्रता का प्रज्वलन तो हुआ ही नहीं बल्कि दिनों-दिन इनमें वृद्धि ही हो रही है। अतः विचार करने पर आप मानेंगे कि योगाग्नि प्रज्वलित करने से हमारी पुरानी कटु स्मृतियां मिट सकती हैं। हमारे दुःख दूर हो सकते हैं और आने वाले नये वर्ष में हमारे जीवन में आनंद और उल्लास आ सकता है। इसीलिए होलिका के दिन गोबर और घास-फूस को अग्नि की ज्वाला में जलाना वास्तव में मन की उबड़-खाबड़ अथवा दूषित वृत्तियों को योगाग्नि द्वारा भस्मसात करने की प्रेरणा देता है। इसी कारण इस त्योहार को कई लोग 'राक्षस विनाशक' त्योहार भी मानते हैं। क्योंकि यह माया रूपी राक्षसी को ज्ञान रूपी हो-हल्ले से भगाने का त्योहार है।

कई लोगों का कहना है कि होलिका शब्द का अर्थ है 'भुना हुआ अन्न'। होलिका के अवसर पर लोग अग्नि में अन्न डालते हैं और गेहूँ और जौ की बाली को भूनते हैं। योगियों की बोल-चाल में ज्ञान अथवा योग को अग्नि की उपमा दी जाती है। क्योंकि जैसे भुना हुआ बीज आगे उत्पत्ति नहीं कर सकता वैसे ही ज्ञानयुक्त और योगयुक्त अवस्था में किया गया कर्म भी अकर्म हो जाता है, अर्थात् वह इस लोक में विकारी मनुष्यों के संग में फल नहीं देता। अतः 'होलिका' शब्द भी हमें इस बात की स्मृति दिलाता है कि परमपिता ने पुरानी सृष्टि के अंत में मनुष्य को ज्ञान-योग रूपी अग्नि द्वारा कर्म रूपी बीज को भूलने की जो सम्मति दी थी हम उस पर आचरण करें। चंद लकड़ियों को, उपलों को इक्ट्ठा करके जलाने को ही हम होली न मानें बल्कि योगाग्नि में अपने पुराने एवं खराब संस्कारों को दग्ध करें। और आगे के लिए कर्मों को ज्ञानयुक्त होकर करें।

होली के अवसर पर एक-दूसरे पर रंग डालने की प्रथा भी इसी भाव को व्यक्त करती है, जैसे ज्ञान के अनेक नाम 'अंजन, अमृत, अग्नि इत्यादि हैं, वैसे ही ज्ञान को रंग भी कहा गया है। ज्ञानी मनुष्य अपने रंग से दूसरों पर भी अपने ज्ञान का रंग चढ़ाता है। उनकी आत्मा रूपी चोली को भी परमात्मा की लाली में लाल करता है। जब तक मनुष्य स्वयं भी ज्ञान में न रंगा जाये और दूसरों पर भी ज्ञान की वर्षा न करे तब तक वह आनन्दित व प्रफुल्लित नहीं हो सकता और तब तक परमात्मा से उसका मंगल मिलन भी नहीं हो सकता।

अतः आज एक-दूसरे पर रंग डालने तथा छोटे-बड़े परिचित-अपरिचित सभी से प्रेम भाव से मिलन की जो रीति है इसका शुरू में यही रूप था कि परमपिता परमात्मा शिव से ज्ञान प्राप्त करके मनुष्य ने ज्ञान पिचकारी से एक-दूसरे की आत्मा रूपी चोली को रंगा था और एक-दूसरे के प्रति मन-मुटाव तथा मलिन भाव त्याग कर मंगलकारी परमात्मा शिव से मंगल मिलन मनाया था। ज्ञान के बिना मनुष्य भला मंगल मिलन मना ही कैसे सकता है! अज्ञानी और मायावी मनुष्य अपने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि राक्षसी स्वभाव से दूसरों का अमंगल करता है, उनके अधोपतन का निमित कारण बनता है; वह मंगल मिलन तो तभी मना सकता है जब ज्ञान अबीर आत्मा को रंगे और पुराने विचारों, आचारों, समाचारों और मनोविकारों को योग की अग्नि का ईंधन बना दे। इसीलिए होली को 'हो-ली' के रूप में मनाना ही उसका यथार्थ रूप है। हो-ली माना हो चुका। उसको भूल जाना। होली का दूसरा अर्थ है पवित्रता। तो इसीलिए परमात्मा द्वारा लगाए गए ज्ञान रंग से व योग अग्नि से अपनी आत्मा रूपी चोली को होली बनाना है।

तो होली के अवसर पर एक-दूसरे पर रंग डालना, दूसरा, अंतिम दिन होलिका जलाना, तीसरा, मंगल मिलन मनाना तो इन तीनों के आध्यात्मिक रहस्य को लेकर ही होली को मनायें।

नरेला-दिल्ली। शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए फेडरेशन ऑफ नरेला के अध्यक्ष जोगेंद्र दहिया, सूर्या एनक्लेव के प्रधान सूरज सिंह, राजौरी गार्डन सबज़ोन निदेशिका ब्र.कु. शक्ति बहन। साथ हैं नरेला सेवाकेन्द्र संचालिका तथा अन्य।

मोतीहारी-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ बनियापट्टी सेवाकेन्द्र द्वारा नवयुवक पुस्तकालय में आयोजित 89वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए जिलाधिकारी सौरभ जोरवाल, ब्र.कु. कंचन, उत्तर बिहार की ब्र.कु. मीना, ब्र.कु. विभा, ब्र.कु. शशिकला, ब्र.कु. अशोक, विरेन्द्र जालान तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

मोहम्मदाबाद गोहना-उ.प्र.। शिवरात्रि के पावन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् मुख्य अतिथि तहसीलदार आलोक रंजन सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय शाखा प्रभारी ब्र.कु. गोमा बहन। साथ हैं सारनाथ,वाराणसी ज़ोन के क्षेत्रीय प्रबंधक राजयोगी ब्र.कु. दीपेंद्र एवं ब्र.कु. तापोशी,सारनाथ।

बिजनौर-उ.प्र.। शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान जन-जन को शिव संदेश देने हेतु रैली निकालते हुए ब्र.कु. रीता तथा अन्य भाई-बहनें। कार्यक्रम में उपस्थित रहे ब्र.कु. एल्विन बहन,आरटीओ रूड़की, डॉ. गोमती अग्रवाल,मेडिकल विंग,माउंट आबू, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. प्रवेश बहन, ब्र.कु. सुरेश बहन, ब्र.कु. जगपाल, नगरपालिका अध्यक्षा श्रीमती इन्द्रा सिंह तथा डॉ. बीरबल सिंह।

फरीदाबाद-सेक्टर-21डी(हरि.)। 38वां इंटरनेशनल सूरजकुंड हैंडीक्राफ्ट मेला में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र की ओर से लगाई आध्यात्मिक प्रर्दशनी में उपस्थित रहे हरियाणा टूरिज़्म के जर्नल मैनेजर आशुतोष राजन, हरियाणा राज्य महिला आयोग की चेयरपर्सन रेनू भाटिया, साइबर ताऊ बल्हारा सिंह, ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. रंजना, ब्र.कु. डॉ. रामकुमार तथा अन्य।

अजमेर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र आगमन पर जेएलएन अस्पताल के नर्सिंग ऑफिसर अरविंद तमोली को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. जीत बहन।